Volume: 2 Issue: 8 Pages: 83-85

कमूलय आधारित षिक्षा के उद्देष्य

*[1] कमलेष कुमार चांवले

*[1] सहायक प्राध्यापक–राजनीति विज्ञान, षासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर, अवधेश प्रताप सिंह विष्वविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेष, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 5.231
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 21/July/2023
Accepted: 30/Aug/2023

***CorrespondingAuthor**
कमलेष कुमार चांवले
सहायक प्राध्यापक–राजनीति विज्ञान, षासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर, अवधेश प्रताप सिंह विष्वविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेष, भारत।

सारांष

नैतिक मूल्य किसी व्यक्ति के अपने सिद्धांत अथवा गुण है, जो उसके निर्णय तथा व्यवहार को संचालित करते है। नैतिक मूल्य काफी कुछ जहाज के लंगर के समान है। जिस प्रकार एक जहाज तेज बहाव के आने पर भी लंगर के सहारे किनारे से लगा रहता है, उसी प्रकार उत्तम चरित्र और उच्चतर नैतिक मूल्यों वाला व्यक्ति विकट परिस्थिति अथवा दबाव में भी अपने सिद्धांतो पर अडिग रहता है। नैतिक मूल्यो का संबंध उन विचारों से हैं, जिनका हम सम्मान करते है। अर्थात जो वाछनीय है, क्योकि मानव जीवन में उनकी महत्ता है। किसी वस्तु या विचार को मूल्यवान कहने का अर्थ यह है कि वह वांछनीय है और वह वांछनीय इसलिए है क्योकि उसकी महत्ता है और उसकी महत्ता इस तथ्य में है कि वह हमारे संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में सहायक है अर्थात उसके द्वारा हमें आत्मसिद्धी की प्राप्ति होती है। नई राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 भी हमारे व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास की जरूरत को पूरा करने के उददेष्य के साथ बनाई गई है। इस नीति में 21वी सदी के अनूरूप आवष्यक शैक्षणिक व्यवस्था में सुधार और पुर्नव्यवस्थापन के साथ ही भारतीय परंपरा एवं उसके सांस्कतिक मूल्यों को बरकरार रखने की भी बात की गई है। यह नीति इस सिद्धांत पर बनाई गई है कि षिक्षा से न केवल साक्षरता, उच्च स्तर की तार्किक और समस्या समाधान संबंधी ज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए , बल्कि नैतिक मूल्यों के साथ सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना चाहिए।

मुख्य शब्द: षिक्षा, मूल्य, नैतिकता, साक्षरता, व्यक्तित्व।

Introduction

षिक्षा का शाब्दिक अर्थ है सीखने और सिखाने की किया। इस प्रकार हम कह सकते है कि समाज में चलने वाली वह निरंतर प्रकिया जिसका उद्देष्य व्यक्ति के आन्तरिक शक्तियों का विकास करना और उसके व्यवहार में सुधार लाना है। षिक्षा का प्राथमिक उद्देष्य ज्ञान और कौषल में वृद्धि कर मनुष्य को योग्य नागरिक बनाना है। गौरतलब है कि आजादी के बाद भारत में पहली षिक्षा नीति 1968 में बनाई गई थी जो मुख्यतः लॉर्ड मैकाले की अग्रेजी प्रधान षिक्षा नीति पर आधारित थी। इसके पष्चात 1986 में बनाई गई। इसमे 1992 में कुछ संषोधन भी किए गये किन्तु इसका भी ढांचा मूलतः अग्रेजी माध्यम षिक्षा पर ही केन्द्रित रहा। समय के साथ हमें यह महसूस हुआ कि 1986 की षिक्षा नीति में कुछ कमियां है इसके तहत बच्चा ज्ञान तो हासिल कर रहा है किन्तु यह ज्ञान उसे भविष्य में रोजगार के अवसर पैदा करने योग्य नही बना पा रहा है। अतः इन्ही कमियों को दूर करने के लिए नई राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 की आवष्यकता पडी।

जब से देष में राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 लागू हुई है, तब से षिक्षा पर विचार–विमर्ष शुरू हो गया है। पिछले कुछ दषको में षिक्षा की व्याख्या की गई है ,उन्हे देखकर एसा लगता है जैसे 'षिक्षा' शब्द का अर्थ जानने की जरूरत किसी को महसूस नहीं हो रही है, क्योकि यदि षिक्षा के मूल लक्ष्य को हम समझ जाते तो हमें लगता है कि आज कही षिक्षा दी ही नही जारही है। आज जैसे धर्म का स्थान 'रिलिजन' ने ले लिया है वैसे ही षिक्षा का स्थान भी 'एजुकेषन' ने ले लिया है। जिसका एकमात्र लक्ष्य नौकरी प्राप्त करना है। अपना पेट भरने के लिए अपना जीवन किसी और के पास गिरवी रखकर पूरा जीवन दूसरे के अधीन व्यतीत करना हाक गया है। यह बहुत ही आष्चर्य की बात है कि इस सृष्टि का सर्वश्रेष्ट प्राणी केवल अपना पेट भरने के लिए षिक्षित होना चाहता है। मॉ–बाप की जीवन भर की कमाई खर्चकर, अपने जीवन के

अमूल्य 20–25 वर्ष लगाकर अेत में पूरा जीवन किसी और का नौकर बनकर जीना चाहता है। जबकि वास्तविक षिक्षा स्वतंत्र रहकर जीना और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना सिखाती है।

षिक्षा या एजुकेषन में एक प्रमुख अंतर है कि हमारा देष पुरूषार्थ प्रधान जीवन शैली का समर्थक है। जिसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हमारे बुद्धि, शरीर, मन और आत्मा के आध्यात्मिक रूप है। षिक्षा में ये चारों समाहित है। जबकि एजुकेषन में केवल अर्थ अर्थात भौतिक पदार्थ की ही प्रधानता है, जिसका मुख्य लक्ष्य शारीरिक सुख मात्र है। इसी से हमारा मन (काम) भी संबंध रखता है। एजुकेषन में जीवन का अर्धांग (धर्म एवं मोक्ष) पूरा ही बाहर निकाल दिया गया है। अससे व्यक्तित्व का पूर्ण निर्माण संभव ही नहीं है। यह अपूर्णता ही एजुकेषन की मुख्य कमी है। आज व्यक्ति जितना उच्च षिक्षा ग्रहण करता है, उतनी ही उसके व्यक्तित्व की अपूर्णता गहन होती जाती है और उसमें दया, करूणा और संवेदना के भाव कम होते जाते है। एजुकेषन का एक अन्य दुष्प्रभाव संयुक्त परिवारो का विघटन है , क्योकि नौकरी करने के लिए घर छोडना ही पडता है। संयुक्त परिवारो के विघटन का परिणाम संस्कारों की विलुप्ति के रूप में सामने आ रहा है। बच्चों को क्या और कैसे पढाया जाय, इसकी जानकारी तो आधुनिक माता–पिता को है और न ही उनके पास बच्चों के लिए समय है। दादा–दादी के पास ज्ञान और समय दोनों है, लेकिन आधुनिक माता–पिता को उनपर विष्वास पहीं होता है। इन सब का परिणाम संस्कार विहीन समाज के रूप में हमारे सामने आ रहा है।

आज षिक्षा व्यवसाय और षिक्षक व्यवसायी बन गया है। और इस स्थिति में जब षिक्षक स्वयं व्यापारी, भ्रष्ट होकर षिष्यों का शोषण करने लगे तो षिक्षा की स्थिति का गिरना स्वाभाविक है। इसी कारण षिक्षा में राजनीति का प्रवेष हो जाता है। राजनीति के प्रवेष के साथ ही सत्ता बल, धन–बल, आक्रामकता, हिंसा, कट्टरवाद आदि भी शैक्षणिक संस्थानों के अंग बनते जा रहे है। हमारी षिक्षा व्यवस्था का आधार सूचना है, इसमे जिसके पास सर्वाधिक सूचनाएं है वह ज्यादा षिक्षित है। लेकिन वह अपने स्वयं के बारे में सबसे कम जानता है। ठीक वैसे ही जैसे फेसबुक, ट्विटर पर हमारे मित्रो–फालोवरो की संख्या हजारो–लाखो में है, किन्तु वास्तविक जीवन में मित्रो की संख्या कम होती जा रही है। थ्री इडियट, तारे जमीन पर जैसी फिल्मे इन्ही विचारो की अभिव्यक्ति है। वर्तमान षिक्षा प्रणली तयषुदा सिद्धांत देती है, लेकिन विचार उत्पन्न करने की क्षमता विकसित नहीं करती है। अभी हमारी षिक्षा व्यवस्था उत्तर निर्भर है, प्रष्न निर्भर नही है। यह षिक्षा प्रणाली बोध स्मृति पर आधारित है और यह षिक्षा प्रणाली हमें पंडित तो बना सकती है किन्तु ज्ञानी नहीं। आज की षिक्षा विनयषीलता के स्थान पर अहंकार पैदा करती है। समाज में जिसे भी षिक्षित होने का अवसर मिला है, वे सभी अग्रेजीदा हो गए है। हमारा आज का समाज अनपढों से कम और पढे–लिखे लोगो से ज्यादा त्रस्त है। सभी लोकसेवक सामान्य जनता के लिए पाषाण–ह्रदय हो गए है जिनका परिणाम भ्रष्टाचार के रूप में सामने आ रहा है। और भ्रष्टाचार की इस नाजायज संतान को पालने–पोषने में समाज का षिक्षित वर्ग ही अधिक जिम्मेदार है।

हमारी प्राचीन षिक्षा का सपना 'वासुधैव कुटुम्बकम' रहा है। लेकिन एजुकेषन में व्यक्ति अकेला स्वयं के लिए जीना सीख रहा है। जैसा कि लोक प्रषासन के विद्वान डा. माहेष्वरी ने कहा है – ''मैने पढाई के समय नैतिक षिक्षा पढी, हमार बेटे ने शारीरिक षिक्षा और हमारे पोते ने व्यावसायिक षिक्षा।'' आज हमें फिर से नैतिक षिक्षा की ओर लौटना होगा। क्योकि दो पीढी के बाद देष में कोई समाज बचेगा या नही , यह कहा नही जा सकता। पष्चिम का उदाहरण हमारे सामने है। विज्ञान और धर्म दोनों ही आज अपूर्ण है। धर्म को शास्त्रों से बाहर लाना पडेगा और विज्ञान (षिक्षा) को भी जीवन के सभी पक्षों से जोडना होगा। राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 इन्ही विचारो को धरातल पर लाने का प्रयास है।

षिक्षा व्यवस्था को सफल नहीं बल्कि सफल मनुष्य की अवधारणा का विकास करना चाहिए। किसी व्यक्ति के बुरे कामों में सफल होने से अच्छा है कि वह अच्छे काम में असफल हो जाए। अभी भी षिक्षा व्यवस्था पर चिंतन कर आज की प्राथमिकताओ के अनुरूप आमूल–चूल परिवर्तन करना अनिवार्य है। इसके लिये अब एकमात्र आस युवा पीढी से बची है। वही षिक्षा की उपभोक्ता भी है और वही बडा परिवर्तन लाने में सक्षम भी है। उसको देष, समाज और स्वयं के सर्वांगीण विकास की आवष्यकताओं का पुनः आकलन करके क्रान्तिकारी कदम उठाने होंगे। युवाओ का लोकतंत्र के तीनो पायो (कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका) को यह दृढता से समझा देने की आवष्यकता है कि षिक्षा पहले व्यक्ति का चारित्रिक विकास करे, ताकि वह केवल पेट भरकर बिना कुछ किए अपना जीवन न व्यतीत करे।

व्यक्तित्व के विकास के दो आधारस्तंभ होते है – एक संस्कृति और दूसरी षिक्षा। जब आधार सही होगा तभी व्यक्तित्व का समग्र विकास संभव होगा , इसके लिए षिक्षा प्रणाली में सुधार आवष्यक था। स्वतंत्रता के समय हमें बहुत सारे स्कूल और कॉलेज खोलना हमारी प्राथमिक आवष्यकता थी। 1950 में देष मे 20 विष्वविद्यालय थे, जिनकी संख्या अभी 943 हो गई है। जब इतना बडा मात्रात्मक वृद्धि होती है तो गुणात्मकता में कमी आना स्वाभाविक है। हम सभी अवगत है कि वर्तमान समय में हमारे मूल्यों का क्षरण हुआ है और इसका असर षिक्षा में भी देखपे को मिल रहा है। वर्तमान में 93 प्रतिषत बी.एड. कॉलेज निजी हाथों मे है। जबकि हमें षिक्षकों की षिक्षा पर सबसे ज्यादा ध्यान देना था जो हम नही दे पाए है इसीलिए बहुत सारे निजी बी.एड. कॉलेजो को अनुमति दे दी गई है और उसमें भी सीटे खाली रहती है। इसी तरह से जो खर्च कर सकते थे उन्होने जब चाहा इंजिनियरिंग और मेडिकल कॉलेज खेल लिया। यह कभी देख ही नहीं गया कि वास्तव में राष्ट्र , देष या समाज को अब कितने इंजिनियरों , डाक्टरों या षिक्षकों की जरूरत है। किसी भी षिक्षा व्यवस्था का आधार षोध है और षोध जो कि किसी विष्वविद्यालय को नाम और पहचान देता है वह देष के कुछ अच्छे विष्वविद्यालयो को छोडकर शेष विष्वविद्यालय नही कर पाए। विषेषकर राज्य विष्वविद्यालय जहां पर वित्त और षिक्षकों दोनो की कमी है। और यह मान्यता बन गई कि जो षिक्षक शोध नही करता वह अच्छा षिक्षक नहीं है। ये दोनो चीजें साथ–साथ चलती रही है। केन्द्र और राज्य सरकारों में समन्वय की कमी की वजह से ऐसे विष्वविद्यालयो की घोषणा कर दी गई जो बाद में बजट की कमी से जूझते रहें। अभी हमारे नियमों में है कि हर प्राध्यापक को पी. एच.डी. करनी है , सेमिनार में जाना ही है। इन सब का परिणाम यह हुआ कि पी.एच.डी. और सेमिनार का स्तर नीचे आया और यह एक तरह से तमाषा बन गया है। किसी भी दबाव में उच्च श्रेणी का शोध नहीं होता है , यह तभी संभव है जब षिक्षक स्वयं अपने मन से कार्य करता है। 1992 की उदारीकरण , वैष्वीकरण और निजीकरण का भी षिक्षा पर प्रभाव पडा है। जब हमारी नीतियॉ इनके अनुरूप बनी, तब बाजार षिक्षा पर हावी हो गया। इससे षिक्षा के मूल्य और गुणवत्ता दोनो समाप्त हो गए। षिक्षक जो हमारे लिए आदरणीय होता था, वह ऐसा हो गया जैसे जितनी तनखा मिलेगी , उसमें उतनी षिक्षा ले आऐंगे और जितने पैसे हम दे पाएगे वैसी षिक्षक (संविदा, अतिथि, नियुक्ति) हम ले आऐगे। इससे सच में षिक्षा का स्तर गिरा है और इसी कारण इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट, बी. एड. टीचर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट बनते चले गए। ऐसा माना जाता है कि षिक्षा युवा व्यक्ति को आनेवाले बदलावों को समझने और उसका विष्लेषण करने के लिए तैयार करती है। वह उसे योग्यता से सुसज्जित करती है, ताकि वह बदलाव का अंग बन सके और परिवर्तन का नेतृत्व कर सके। भारतीय षिक्षा–व्यवस्था को सक्षम व कारगर बनने के लिए कठिन संघर्ष करना पडेगा, ताकि समाज द्वारा निर्धारित उद्देष्य की प्राप्ति हो सके। इसके कार्यो का पता लगाना मुष्किल नहीं है। अधिकांष संस्थानों की कार्य–संस्कृति पूर्ववत है। स्कूलो का निष्पादन न के बराबर है तथा कॉलेजों में स्टाफ की कमी है। विष्वविद्यालयों में पुस्तकालय, प्रयोगषालाएं व नियमित फैकल्टी मैम्बर के बिना अध्यापन कार्य चल रहे है। मूल्यों के चौतरफा ह्रास से

षिक्षा–व्यवस्था गंभीर रूप से प्रभावित है। नई षिक्षा नीति में इन समस्याओं का समाधान करने की कोषिष की गई है।

निष्कर्ष

षिक्षा का उद्देष्य नैतिक मूल्यो से संपन्न मानव का निर्माण करना होना चाहिए। विवेकानंदजी का विचार था कि ''विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के माध्यम से अतीत के प्रति सम्मान, वर्तमान की चुनौतियों एवं संबंधों के लिए सक्षम तथा भावी जीवन को सुखद एवं सुन्दर बनाने में समर्थ बनाना है।'' पाठ्यक्रम सैद्धांतिक के साथ व्यवहारिक भी होना चाहिए तथा वह व्यक्तित्व को पूर्णता की ओर अग्रसर करने में सहायक होना चाहिए। उन्होने षिक्षा को संस्कारो से जोडा तथा जीवन को सुखमय बनाए रखने के लिए जीवन के छः प्रमुख सिद्धांत सुनिष्चित किए – आत्मा की अमरता, विनम्रता का आचरण, माता–पिता एवं गुरूजनों के प्रति सदैव ऋणी रहना, जीवमात्र में ईष्वर के दर्षन कर सभी के प्रति मित्रता का भाव रखना, जीवन के कर्तव्य का पालन करना और ईष्वर पर अटूट आस्था रखना। उन्होने चरित्र निर्माण की महत्ता को समझाते हुए कहा – यदि आपने उत्तम विचारों को ग्रहण करके अपने जीवन और चरित्र का आधार बना लिया, तो आप उस व्यक्ति से अधिक षिक्षित है जिसने सम्पूर्ण पुस्तकालय को कंठस्थ कर लिया है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. अंजली भटनागर, ''नई षिक्षा नीति के संदर्भ में मानव जीवन दर्षन'' राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना, दिसंबर, 2022, 121–124.
2. डॉ. जी. आर. चौहान, ''नई षिक्षा नीति–2020 एवं जीवन दर्षन'' राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना, दिसंबर, 2022, 44–45.
3. जे. एस. राजपूत, ''क्या हम ऐसी षिक्षा दे रहे है, जो बंधनो से मुक्त करती है?'' समर्थ भारत, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाषन, 2009, 270–277.
4. एन. एन. ओझा, नीतिषास्त्र, सत्यनिष्ठा व अभिरूचि शब्दकोष, नई दिल्ली, क्रानिकल पब्लिकेषन, 2015, 94–132.
5. राष्ट्रीय षिक्षा नीति. 2020; 3:86-91.
6. करण सिंह, ''राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 एवं उच्च षिक्षा का बदलता स्वरूप'' लोक प्रषासन, मानवाधिकार एवं नई षिक्षा नीति, 2023, 108–112.
7. श्रीमति चंद्रकान्ता शर्मा, ''राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 और मातृभाषा में अर्जित ज्ञान की प्रासंगिकता'' लोक प्रषासन, मानवाधिकार एवं नई षिक्षा नीति, 2023, 99–102.
8. डॉ. रत्नेष किषोर वर्मा, '' राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 '' राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना, दिसंबर, 2022, 09–13.
9. डॉ. सुखचैन सिंह धुर्वे, '' राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 और षिक्षक '' राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना, दिसंबर, 2022, 45–47.
10. डॉ. नीलम चतुर्वेदी, '' राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 और आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना '' राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना, दिसंबर, 2022, 91.
11. दत्तात्रेय होसबोले ''षिक्षा का वर्तमान परिदृष्य और स्वामी विवेकानंद के षिक्षा संबंधी विचारों की प्रासंगिकता'' म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी व्याख्यानमाला श्रंखला 2012/2, 2022, 01–13.